

इतिहास में पहली बार

सुपरमार्केट चार पहियों पर

आपके घर आएगा

महीने भर का राशन, देख कर, छू कर, क्वालिटी समझ कर फिर खरीदो



KEDIA™
Pavitra

रिटेलर हो या कस्टमर:
कॉल लगाओ, गाड़ी बुलाओ

1800 120 2727

- शरबती सुपीरियर आटा
- देशी चक्की आटा
- सूजी
- दलिया
- बेसन
- शरबती गेहूँ
- देशी गेहूँ
- प्लेटिनम शरबती राइस

- एलीट बासमती राइस
- पोहा
- लाकाडॉग हल्दी पाउडर
- मिर्च पाउडर
- धनिया पाउडर
- जीरा
- सौंफ
- चना दाल

- मूंग दाल (छिलका)
- मूंग दाल
- अरहर/तूर दाल
- उड़द दाल (छिलका)
- उड़द दाल
- मसूर मलका
- मसूर दाल
- काला चना

- काबुली चना
- हरा चना
- हरा मटर
- मोठ
- हरा मूंग
- राजमा चित्रा
- राजमा लाल
- राजमा कदमरी

- कैलिफोर्निया बादाम
- काजू
- पिस्ता
- किशमिश
- अखरोट
- मामरा बादाम

COMING
SOON

- कच्ची धानी सरसों का तेल
- ट्रिपल फ़िल्टर्ड मूंगफली तेल
- तिल का तेल
- मखाना

- खजूर
- अंजीर
- मूंगफली
- लौंग

- इलायची
- काली मिर्च
- दालचीनी
- अजवाइन

- राई
- मेथी दाना
- कसूरी मेथी
- हींग

- अमचूर पाउडर
- गुड़ पाउडर
- चाय और भी बहुत कुछ

ORDER ON
WEBSITE



ORDER ON
WHATSAPP



ORDER ON
APP



AVAILABLE AT



32000+ RETAILERS



SUPERMARKETS



QUICKCOM/ECOM



WEBSITE



WHATSAPP



APP



TOLL FREE

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बढकारियाँ ही हमारी उपीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

भारत में सभी शहरी क्षेत्रों के आसपास के वनों को कंजर्वेशन रिज़र्व घोषित करना आवश्यक है

30 X 30 एक वैश्विक संरक्षण पहल है, जिसका उद्देश्य 2030 तक पृथ्वी के 30 प्रतिशत भूमि और महासागरों को रक्षा करना है। यह जैव विविधता कन्वेंशन (सीबीडी) के वर्ष 2020 के बाद के वैश्विक जैव-विविधता ढांचे के तहत एक प्रमुख लक्ष्य है। भारत के लिए, सभी पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिज़र्व घोषित करना इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 7,9३5 शहर और कस्बे थे। यहाँ शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है। इन शहरों और कस्बों के आसपास स्थित पेरी-अर्बन वनों की रक्षा करना पारिस्थितिक गलियारों को मजबूत करेगा, शहरी जैव-विविधता को बढ़ावा देगा और जलवायु सहसुरीलाता में सुधार करेगा। ये वन कार्बन भंडार के रूप में कार्य करते हैं, महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करते हैं और घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जैव-विविधता हानि को कम करते हैं। पेरी-अर्बन वनों को 30 30 रणनीति में शामिल करना समावेशी संरक्षण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता के साथ मेल खाता है, जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी और देश की अनेकों जैव-विविधता और पारिस्थितिक अखंडता के लिए एक टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करना शामिल है।

पेरी-अर्बन वन-हरे भरे क्षेत्र जो शहरों के बाहरी इलाकों में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच स्थित हैं-पारिस्थितिक जोड़नेवाले हैं जो शहरीकरण के प्रतिकूल प्रभावों को कम करते हैं। ये वन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करते हैं, जिनमें कार्बन अवशोषण, जल चक्र विनियमन, जैव-विविधता संरक्षण, स्थानीय तापमान को संतुलित करना और अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रकृति-आधारित समाधान के ख़ौत के रूप में काम करना शामिल है।

तेजी से शहरी विस्तार के साथ, पेरी-अर्बन वन, कटौत, शहरीकरण के कारण भूमि उपयोग में बदलाव और प्रबंधन में उपेक्षा जैसी बड़ती चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इसलिए, इनके बहुआयामी लाभों के प्रमाणों के आधार पर, सभी पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिज़र्व घोषित करना और उनका प्रबंधन करना आवश्यक है।

भारत विश्व स्तर पर पेरी-अर्बन वनों की बहाली की उच्चतम संभावना वाले शीर्ष चार देशों में शामिल है, जिसमें चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राज़ील भी शामिल हैं। ये चार देश पुनर्स्थापन गतिविधियों के लिए उपलब्ध वैश्विक पेरी-अर्बन क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण हिस्साप्रदान करते हैं। अकेले भारत में लगभग 14 से 17 मिलियन हेक्टेयर भूमि ऐसी पहलों के लिए उपयुक्त मानी गई है, जो जलवायु परिवर्तन से निपटने, जैव-विविधता को बढ़ावा देने और शहरी महसूलीता में सुधार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (एस. फ्रांसिनीएटअल., नेचर सिटीज, वॉल्यूम 1, पेज 286–294, 2024)। यह वैश्विक पुनर्स्थापन प्रयासों में भारत की केंद्रीय भूमिका और लक्षित पुनर्वासकरण गतिविधियों के माध्यम से महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और सामाजिक लाभ प्रदान करने की इसकी क्षमता को उजागर करता है।

भारत में शहरी और पेरी-अर्बन राष्ट्रीय उद्यानों और संरक्षण रिज़र्वों का एक व्यापक नेटवर्क है, जो जैव-विविधता संरक्षण और शहरी पारिस्थितिकी सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान (मुंबई), जो 103 वर्ग किलोमीटर में फैला है, शहर के लिए एक हरा फेज़डा है और तेंदुओं सहित विविध वन्यजीवों का घर है। इसी तरह, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान (भोपाल), 4.45 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और प्राकृतिक बाढ़ों में जानवरों के साथ एक प्राणी उद्यान के रूप में कार्य करता है। गिंडी राष्ट्रीय उद्यान (चेन्नई), जो केवल 2.7 वर्ग किलोमीटर में फैला है, काले हिरण, चीतल और पक्षियों के लिए एक शहरी अभयारण्य है।

हैदराबाद में कासुब्रह्मानंद रेड्डी (केबीआर) राष्ट्रीय उद्यान, जो 1.43 वर्ग किलोमीटर में फैला है, शहर के केंद्र में स्थित एक शहरी वन है, जो उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनस्पति को संरक्षित करता है और आवश्यक पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करता है। महावीर हरिना वनस्थली राष्ट्रीय उद्यान, 14.59 वर्ग किलोमीटर में फैला है और काले हिरणों की आबादी और शिक्षा तथा मनोरंजन में अपनी भूमिका के लिए जाना जाता है। बरेल्लरुा राष्ट्रीय उद्यान (बैंगलुरु), 2६0.5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और हाथी गलियारे और पारिस्थितिक पर्यटन सुविधाओं को जोड़ता है, जो शहरी दबावों और वन्यजीव संरक्षण के बीच संतुलन बनाता है।

चंदका-दामपाड़ा वन्यजीव अभयारण्य, जो भुवनेश्वर, ओडिशा के पास स्थित है, 193.39 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है और शहरी क्षेत्रों के करीब एक महत्वपूर्ण हाथी अभयारण्य है। यह मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने और जैव-विविधता को संरक्षित करने में पेरी-अर्बन संरक्षित क्षेत्रों के महत्व को रेखांकित करता है। जयपुर का झालाना-अमागढ कंजर्वेशन रिज़र्व, जो 32 वर्ग किलोमीटर में फैला है, अपनी बड़ती तेंदुओं की आबादी, कार्बन संचय, भू-जल पुनर्भरण और पर्यावरण पर्यटन के लिए जाना जाता है।

हमने हैदराबाद, तेलंगाना के पास स्थित 1०9 शहरी और पेरी-अर्बन वनों में से एक का दौरा किया, जो 250 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है और उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन प्रजातियों के उल्लेखनीय प्राकृतिक पुनर्जनन को प्रदर्शित करता है। मजबूत संरक्षण उपायों ने जैव-विविधता की रक्षा की है, जलग्रहण क्षेत्र की स्थिति को बेहतर बनाया है और आसपास की झीलों को स्वच्छ पानी प्रदान किया है। इसी प्रकार हैदराबाद का कासुब्रह्मानंद रेड्डी

पेरी-अर्बन वन पारिस्थितिक पर्यटन, टिकाऊ आजीविका और शीतलन के लिए ऊर्जा लागत को कम करके अतिरिक्त आर्थिक लाभ भी प्रदान करते हैं। ऐसी सेवाएं पेरी-अर्बन वनों को संरक्षित करने के वित्तीय लाभों को रेखांकित करती हैं। पेरी-अर्बन वनों को कंजर्वेशन रिज़र्व घोषित करना संसाधनों के उपयोग को नियंत्रित करेगा और स्थानीय व राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करेगा।

और शहरी योजना को एकीकृत करने का उत्तम उदाहरण है। पेरी-अर्बन वन स्थानीय जलवायु को स्थिर करने के लिए अपरिहार्य हैं।विशेष रूप से उन शहरी और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में जो अत्यधिक गर्मी की चोट में आते हैं। झालाना-अमागढ संरक्षण रिज़र्व इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रोफेसर आ. योसेफ और उनकी टीम द्वारा किए गए एक अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि पेरी-अर्बन वनभूमि सतत तापमान (LST) को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सैटेलाइट इमेजरी का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने पाया कि झालाना-अमागढ संरक्षण रिज़र्व के भीतर का थ्रूज, आसपास के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में सभी मौसमों में काफी कम था। यहशीतलन प्रभाव दिखाता है कि वन शहरी गर्मी द्वीपों (Urban Heat Islands) का कैसे मुकाबला करते हैं, जो अन्यथा शहरों में गर्मी से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों को बढ़ाते हैं (Forests, Vol. 13, Pages 1101, 2022)? यह निष्कर्ष घनी आबादी वाले क्षेत्रों में जीवन स्तर को सुधारने के लिए भारत में शहरी और पेरी-अर्बन वनों को प्राथमिकता देने की मजबूत वकालत करता है।

शीतलन के अलावा, पेरी-अर्बन वन वैश्विक जलवायु शमन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एस. फ्रांसिनी और उनके सहयोगियों ने पाया कि विश्व स्तर पर उपयुक्त पेरी-अर्बन क्षेत्रों को पुनर्स्थापित करने की 1०1 से 1०6अरब पेट्टों के लिए स्थान उपलब्ध कराय़ा जा सकता है, जो कार्बन अवशोषण में महत्वपूर्ण योगदान देगा (Nature Cities, Vol. 1, Pages 286–294, 2024)?

पेरी-अर्बन वनों में निवेश पारंपरिक 'ग्रे' अवसंरचना,जैसे बांध और तटबंध, के बजाय बाढ़ नियंत्रण और जलवायु अनुकूलन के लिए एक किफायती विकल्प है। आर. मलेकनिया और उनकी टीम द्वारा किए गए अध्ययन यह दर्शाते हैं कि पेरी-अर्बन वन प्राकृतिक स्पंज के रूप में कार्य करते हैं, वर्षा जल को अवशोषित करते हैं, जल पुनर्भरण करते हैं, और शहरी बाढ़ के जोखिम को कम करते हैं (Forests, Vol. 15, 2024)? यह पारिस्थितिकी सेवा आपदा के बाद के पुनर्वास पर होने वाले आर्थिक बोझ को कम करती है और दीर्घकालिक सहनशीलता सुनिश्चित करती है।

पेरी-अर्बन वन पारिस्थितिक पर्यटन, टिकाऊ आजीविका और शीतलन के लिए ऊर्जा लागत को कम करके अतिरिक्त आर्थिक लाभ भी प्रदान करते हैं। ऐसी सेवाएं पेरी-अर्बन वनों को संरक्षित करने के वित्तीय लाभों को रेखांकित करती हैं। पेरी-अर्बन वनों को कंजर्वेशन रिज़र्व घोषित करना संसाधनों के उपयोग को नियंत्रित करेगा और स्थानीय व राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करेगा।

पेरी-अर्बन वन स्वच्छ हवा प्रदान करके, गर्मी के तनाव को कम करके और मनोरंजन स्थल के रूप में शहरी जीवन को गुणवत्ता को बेहतर बनाते हैं। ये लाभ विशेष रूप से भारत के घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, जहाँ हीट-नेव और वायु प्रदूषण शहरी समुदायों को असमन रूप से प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, पेरी-अर्बन वन मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करते हैं। मनोरंजन स्थलों के रूप में ये वन व्यायाम और विश्राम के अवसर प्रदान करते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं।

पेरी-अर्बन वनों को संरक्षण रिजर्व घोषित करना एक क्रांतिकारी नीतिगत समाधान है। इन वनों को सुरक्षा को संस्थापत रूप देगा और उनके पारिस्थितिक, आर्थिक और सामाजिक लाभों को पूरी तरह से प्राप्त करने की क्षमता को साकार करेगा। कंजर्वेशनरिज़र्व कानूनी ढांचा प्रदान करते हैं, जो वनों को शहरी अतिक्रमण और अव्यवस्थित दोहन से बचाते हैं, साथ ही समुदाय की भागीदारी को भी संरक्षन बनाते हैं। पेरी-अर्बन वनों के संरक्षण को बढ़ा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, जीआईएस और रिमोट सेंसिंग उपकरणों का उपयोग करके पेरी-अर्बन वनों की पहचान और मूल्यांकन करना चाहिए, जो भूमि सतह तापमान और पारिस्थितिकी सेवाओं से संबंधित महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करेगा। दूसरे, नीतिगत और कानूनी सुधारों के माध्यम से इन क्षेत्रों को औपचारिक रूप से समय समय पर संशोधित, वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के अनुरूप कंजर्वेशन रिज़र्व के रूप में नामित करना आवश्यक है, जिससे इनकी दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। तीसरे, सहभागी योजना और शिक्षा के माध्यम से समुदायों को शामिल करना महत्वपूर्ण है, ताकि जन-जागरूकता बढ़ाई जा सके और स्थानीय स्तर पर संरक्षण प्रयासों में भागीदारी सुनिश्चित हो। चौथे, सीधी बुआई (बीजरोपण), अगिस्टेड नेचररिजनेरेशन जैसी वैज्ञानिक पुनर्स्थापन तकनीकों का उपयोग करके वनों के पुनर्स्थापन और क्षतिग्रस्त वनों को बेहतर करने में मदद मिल सकती है। अंत में, जन जागरूकता अभियानों के माध्यम से पेरी-अर्बन वनों के पारिस्थितिक लाभों को उजागर किया जा सकता है, जिससे नागरिकों को इन महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्रों की रक्षा के लिए प्रेरित किया जा सके। इन सभी प्रयासों से पेरी-अर्बन वनों का संरक्षण न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को सुनिश्चित करेगा, बल्कि देश के आर्थिक और सामाजिक लाभों में भी योगदान देगा।

—अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फॉरेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

अंगदान से बढ़कर कोई दान नहीं, लोगों को जागरूक करने की महत्ती आवश्यकता



मिश्रीलाल पंवार

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही दान का बड़ा महत्व रहा है। वैसे दान के भी कई प्रकार होते हैं। संकट के समय किसी जरूरतमंद की मदद कर उसे संकट से बचा लेना ही दान कहलाता है। कथा अनुष्ठानों में संत महात्माओं द्वारा दान का खूब गुणगान किया जाता है। मगर उनका लक्ष केवल धन की तरफ रहता है। अंगदान जैसे महत्वपूर्ण दान पर कोई नहीं बोलता। जबकि अंगदान सबसे बड़ा दान है तथा इस पर ध्यान देना आज की पहली आवश्यकता है। बदलते दौर में अंगदान का महत्व बहुत बढ़ गया है। इससे बड़ा कोई अन्य दान नहीं है।

प्राचीन काल में महर्षि दधीचि ने संसार पर आए संकट को टालने तथा दैत्यराज वृत्रासुर के अत्याचारों से मनुष्य जाति को बचाने के लिए अपनी हड्डियाँ देवताओं को दान कर दी थी। अपने शरीर का मोह त्याग कर लोकहित में अपना जीवन त्यागने की यह घटना विश्व में अजय अमर हो गई। उनकी हड्डियों से बने वज्र से ही इंद्र ने वृत्रासुर का वध किया था। यह दान परोपकार

और निस्वार्थ भाव का एक महान उदाहरण है, जहाँ उन्होंने अपने शरीर का त्याग करके देवताओं को शक्तिशाली अस्त्र (वज्र) प्रदान किया।

शास्त्रों के अनुसार वृत्रासुर नामक राक्षस देवताओं और मनुष्यों पर अत्याचार कर रहा था और वह कोई भी अस्त्र मार से मर नहीं रहा था, क्योंकि उसके पास वरदान था कि उसे किसी अस्त्र से नहीं मारा जा सकता। परेशान देवता भगवान शिव के पास पहुंचे और वृत्रासुर राक्षस की बात बताई। भगवान शिव ने कहा कि इसमें सिर्फ महर्षि दधीचि की आप लोगों की सहायता कर सकते हैं। उनकी हड्डियों में वज्र जैसी शक्ति है। महर्षि दधीचि अगर अगर अपनी हड्डियां तुम्हें दान कर देते हैं तो उससे अस्त्र बना कर वृत्रासुर से युद्ध करोगे तो उस राक्षस का अन्त हो जाएगा।

भगवान शिव की बात सुनकर इंद्र और अन्य देवता महर्षि दधीचि के पास पहुंचे और उनकी अस्थियाँ माँगीं। जिससे वे वज्र नामक एक दिव्य और शक्तिशाली अस्त्र बना सके। महर्षि दधीचि ने लोक-कल्याण के लिए अपना शरीर त्यागने का निर्णय लिया। उन्होंने समाधि लगाकर योगबल से अपने शरीर का त्याग कर दिया और केवल अस्थियाँ शेष रह गईं। उन हड्डियों से इंद्र ने वज्र बनाया। इस वज्र से इंद्र ने वृत्रासुर का वध किया और पृथ्वी को उसके अत्याचारों से मुक्त कराया। यह दान निस्वार्थ सेवा, त्याग और लोकहित के लिए था। इससे संसार के प्राणियों की रक्षा हो सकी।

वर्तमान के बदलते दौर में व्यक्ति नाना प्रकार की बिमारियों का शिकार होकर काल का ठास बन रहा है। ऐसे लोगों को बचाने तथा नई जिंदगी देने के उद्देश्य से अंगदान के महत्व को समझा गया। सरकार ने इसके महत्व को देखते हुए कई कद उठाए। अंग दान एवं प्रत्यारोपण मानव अंग और ऊतक प्रत्यारोपण अधिनियम 1994 बनाया। इस कानून को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस अधिनियम को 2011 में संशोधित किया गया था। इस कानून का उद्देश्य चिकित्सीय उद्देश्यों के लिए मानव अंगों को निकालने, भंडारण करने और प्रत्यारोपण करने को विनियमित करना है। लोगों को जागरूक करने के कार्यक्रम चलाए गए। धीरे-धीरे इसके सुखद परिणाम भी आने लगे।

2024 में भारत ने 18,9०0 अंग प्रत्यारोपण कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया और संयुक्त राज्य अमेरिका व चीन के बाद दुनिया में तीसरा स्थान प्राप्त किया। खास बात यह है कि भारत ने जीवित अंगदान में पहला स्थान पाया है, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि आम नागरिकों में आग दान के प्रति जागरूकता आई है।

भारत कुल अंग प्रत्यारोपण के मामले में तीसरे स्थान पर है, जबकि पहले स्थान पर संयुक्त राज्य अमेरिका और दूसरे पर चीन है। भारत जीवित दाता अंग प्रत्यारोपण के मामले में प्रथम स्थान पर है। राष्ट्रीय अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रत्यारोपण की उपलब्धता को बढ़ाना, जागरूकता में सुधार करना और आवश्यक अवसंरचना में वृद्धि करना है। यह कार्यक्रम एक नेटवर्क के माध्यम से संचालित होता है, जिसमें राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन, क्षेत्रीय

सुप्रीम कोर्ट की उच्च स्तरीय कमेटी पाली के नेहड़ा बांध का निरीक्षण करने पहुंची



सेवानिवृत्त जस्टिस संगीत लोढ़ा के नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट की उच्च स्तरीय कमेटी ने नेहड़ा बांध का निरीक्षण किया।

विभाषा कार्यवाही क्यों नहीं करता? मदन सिंह जागरवाल ने खुलासा किया कि गुजरात से रासायनिक टैंकर रात में बांड़ी में खाली होते हैं। सेवानिवृत्त जस्टिस संगीत लोढ़ा के साथ आई टीम नेहड़ा बांध की स्थिति का जायजा लेकर जेतपुर-गढ़वाड़ा के बीच स्थित बांड़ी नदी के करीब पहुंची, जहां भी नदी में उन्हें रंगीन पानी बहता नजर

शीतकालीन अवकाश में भी आंगनबाड़ी केंद्र खुले

अलवर शहर में करीब 158 आंगनबाड़ी केंद्र संचालित किए जा रहे हैं

अलवर, (निसं।) राज्य सरकार और शिक्षा विभाग ने प्रदेश के सभी स्कूलों में तो शीतकालीन अवकाश घोषित कर दिए लेकिन आंगनबाड़ी केंद्रों में अवकाश करना भूल गई। जिले में हजारों की संख्या में आंगनबाड़ी केंद्र खुले हुए हैं। उसमें मासूम और छोटे बच्चे शिक्षा का अनुभव या यूँ कहें गरीब परिवार के बच्चे शिक्षा ग्रहण करने आते हैं जो मात्र तीन से पांच साल की आयु के ज्यादातर देखे जा रहे हैं। अलवर में पारा पांच डिग्री पर पहुंच चुका है लेकिन ये मासूम इतनी ठंड में भी आंगनबाड़ी में पढ़ने आ रहे हैं

आंगनबाड़ी पर तीन से 6 साल तक के छोटे बच्चे आते हैं। किराया कम होने की वजह से बहुत से केंद्र ऐसे हैं जहां सीलन व गलन वाले कमरों में बच्चों को बैठाया जा रहा है। ये तंग गलियों में हैं, इस वजह से धूप भी कम आती है। इस वजह से बच्चों को तेज सर्दी में पढ़ना पौष मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र प्रातः 8:43 तक, वारियान योग दिन 10:13 तक, बव करण दिन 12:00 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में। आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से प्रातः 8:43 तक, रवियोग प्रातः से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी, पंचक है। आज से शाकम्भरी देवी नवरात्रा आरम्भ होगा। श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:36 से 9:53 तक, लाभ-अमृत 9:53 से 12:28 तक, शुभ 1:46 से 3:03 तक। राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:38 तक

- अलवर में पारा पांच डिग्री पर पहुंच चुका है लेकिन ये मासूम इतनी ठंड में भी आंगनबाड़ी में पढ़ने आ रहे हैं**
- शहर में करीब 158 आंगनबाड़ी केंद्र संचालित, जो सुबह 10 से 2 बजे तक संचालित किए जा रहे हैं**

पड़ रहा है। शहर में करीब 158 आंगनबाड़ी केंद्र संचालित किए जा रहे हैं, जो सुबह 1० से दोपहर 2 बजे तक संचालित किए जा रहे हैं। महिला एवं

महिला कर्मिक बारी-बारी से अवकाश ले सकती हैं, ताकि केंद्र बंद न रहे और बच्चों की देखभाल व सरकारी योजनाओं का संचालन होता रहे।

महेश गुप्ता, उपनिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, अलवर का कहना है कि राज्य सरकार की ओर से आंगनबाड़ी केंद्रों पर शीतकालीन अवकाश के लिए मुख्यालय से कोई आदेश जारी नहीं हुए हैं, इसलिए केंद्र खोले जा रहे हैं।

बाल विकास विभाग की ओर से आंगनबाड़ी केंद्रों पर कार्यरत कार्यकर्ता व सहायिकाओं के लिए दस-दस दिन का अवकाश दिया जाता है, जिसमें

पड़ रहा है। शहर में करीब 158 आंगनबाड़ी केंद्र संचालित किए जा रहे हैं, जो सुबह 1० से दोपहर 2 बजे तक संचालित किए जा रहे हैं। महिला एवं

अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन तथा राज्य अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन शामिल है।

अंग प्रत्यारोपण में इस वृद्धि के बावजूद, भारत में मृतक के अंग दान की दर बहुत कम है, जो प्रति दस लाख जनसंख्या पर 1 से भी कम है। स्पेन में यह दर प्रति दस लाख जनसंख्या पर 48 है।

आधार-लिंकड डिजिटल प्रतिज्ञा पोर्टल को सितंबर 2023 में लॉन्च किया गया था। इसके माध्यम से 3 लाख से अधिक नागरिकों ने अंगदान के लिए अपनी प्रतिज्ञा को पंजीकृत कराया है। 2024 में “अंगदान जन जागरूकता अभियान” को शुरू किया गया था।अंगदान में तेलंगाना ने भारत में नंबर 1 राज्य का दर्जा प्राप्त किया।

ओरगन डोनेशन इन इंडिया 2025: पर हर साल स्वास्थ्य के क्षेत्र में अलग-अलग रिकॉर्ड दर्ज होते हैं। साल 2025 में जब राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन और राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्थाओं ने देश में अंगदान-अभियान को गति दी, तो जन जागरूकता से तेलंगाना ने खुद को टॉप पर अछा। अगस्त 2025 में, तेलंगाना को द्वारा भारत का नंबर वन राज्य घोषित किया गया। 15वें भारतीय अंगदान दिवस समारोह में तेलंगाना को सम्मानित किया। अंगदान को लेकर लोगों को जागरूक करने की आज बहुत आवश्यकता है। हालांकि शासन प्रशासन द्वारा इस दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं और उसका सकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं।

पिछले दिनों जोधपुर के महात्मा गांधी अस्पताल के अधीक्षक डॉ.

—मिश्रीलाल पंवार, (लेखक विशेष पत्रकार एवं साहित्यकार हैं)

पाली सर्किट हाऊस पहुंचे। लंच के बाद हाईवे से होते हुए उन्होंने टोटमेंट प्लांट संख्या की स्थिति देखी और टैकरो के चक्के के निशान देख नाराजगी जताई। यहां भी उन्हें बांड़ी नदी में रंगीन पानी नजर आया। टीम यहां का निरीक्षण करने के बाद वापस जोधपुर चली गई।

सेवानिवृत्त जस्टिस संगीत लोढ़ा जब जेतपुर के निकट बांड़ी नदी की रफ्ट से नदी में बह रहा दूषित पानी देख रहे थे, इस दौरान कई किसानों ने उनसे आग्रह किया कि छापरिया गांव के हालात काफी विकट हैं। इस पर वे अपना शेड्यूल बल्लकर छपरिया गांव की तरफ निकले, लेकिन सिंगल कच्चे रोड पर 7-8 किलोमीटर चलने के बाद भी जब गांव नहीं आया तो उन्होंने नाराजगी जताई कि आपको सच बोलना चाहिए था कि तीन किलोमीटर का बोल कर 7-8 किलोमीटर दूर लेकर आ गए। इससे आगे को पूरा शेड्यूल बिगड़ रहा है।

इस दौरान उनके साथ जिला कलैक्टर एलएन मंत्री, एसपी आदर्श सिधु, एसपी त्वरित अनुसंधान सेल

- सेवानिवृत्त जस्टिस संगीत लोढ़ा ने नदी में बहता रंगीन पानी देखा, फोटो-वीडियो बनाए और नाराजगी जताई**

- नेहड़ा बांध अब पानी नहीं, रंग-बिरंगे जहर से भरा है. कपड़ा फैक्ट्रियों का अन्टीट्रेड रासायनिक पानी चोरी-छिपे बांड़ी नदी में छोड़ा जा रहा है**

जयसिंह सीओ ग्रामीण अमरसिंह रत्नु, सीओ सोजन रतनाराम देसाई, जेतपुर थानाप्रभारी जबरसिंह, रोहट थानाप्रभारी पदमप्राद सिंह सहित पुलिस जाब्ता मौजूद रहा। वहीं नेहड़ा बांध, जेतपुर के पास नदी की रफ्ट पर भी बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।

महिला कर्मिक बारी-बारी से अवकाश ले सकती हैं, ताकि केंद्र बंद न रहे और बच्चों की देखभाल व सरकारी योजनाओं का संचालन होता रहे। महेश गुप्ता, उपनिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग, अलवर का कहना है कि राज्य सरकार की ओर से आंगनबाड़ी केंद्रों पर शीतकालीन अवकाश के लिए मुख्यालय से कोई आदेश जारी नहीं हुए हैं, इसलिए केंद्र खोले जा रहे हैं।

मेघ घर-गृहस्थी के खर्चों में नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

वृष आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आज महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मिथुन अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क नवीन कार्यों के संबंध में सरकारामुक्त आवेगसम प्राप्त होंगे। अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कन्या परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

तुला आज परिवर्नों/मित्रों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यक्तिगत प्रयासों से अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। नये-पुराने मित्रों से संपर्क बनेंगे।

वृश्चिक आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी।

धनु घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढेंगी।

मकर परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवर्जनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्य के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

कुंभ आर्थिक कारणों से अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। संभावित खोल ते घन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढेंगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढेंगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढेंगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

